गायत्री देवी अपने ऑफिस इंचार्ज नीरज जैन को साथ लेकर दिल्ली से देहरादून के लिए निकल गई थी।

लेकिन अनिमेष को ढूंढने के लिए उन्होंने अपनी कोशिश रास्ते में से ही शुरू कर दी थी। वे लगातार फोन पर किसी ना किसी के संपर्क में थीं। उन्होंने हरिद्वार के उन प्रभावशाली लोगों को दोबारा फोन किया जिनसे मिलने अनिमेष हरिद्वार गया था, और उन्हें सारे मामले की जानकारी दी थी। उन्होंने भी गायत्री देवी को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

उसके बाद गायत्री देवी ने वहां के महत्वपूर्ण पुलिस-प्रशासन के अफसरों से भी बात की थी और उन्हें सारी घटना बताकर उनसे अनिमेष की खोज करने में मदद करने की प्रार्थना की थी।

इससे हरिद्वार का पुलिस प्रशासन सक्रिय हो गया था और उधर उस घटनास्थल पर भी पुलिस की गाड़ियां पहुंच चुकी थीं । मनोज अभी वहीं था। पुलिसवाले वहां पुल पर खड़े ने लोगों से घटना की जानकारी ले रहे थे। हालांकि अनिमेष और उसकी कार का दूर-दूर तक कोई पता नहीं था । होता भी कैसे 2 दिन पहले पहाड़ों पर बारिश होने की वजह से

गंगा जी में इस समय बहुत जल था और उसके बहने की रफ्तार भी बहुत तेज थी । इसकी वजह से गंगा जी में इस समय वोट भी नहीं उतारी जा सकती थी। इसलिए पुलिस प्रशासन वाले भी कुछ करने में असमर्थ थे। बस एक ही तरीका था कि रोड के सहारे-सहारे जहां तक हो सके जाकर देखा जाये ।

पुलिस ने यह करके देखा भी लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ । ना तो अनिमेष की कार कहीं दिखाई पड़ी और नहीं अनिमेष । इससे जाहिर था कि अनिमेष अपनी कार के साथ गंगा जी के तेज बहाव में कहीं दूर तक बह गया है।

ऐसे ही पुलिस को खोजबीन करते हुए कई घंटे बीत गये मगर अनिमेष का कुछ पता नहीं चल पाया । मनोज अभी घटनास्थल पर ही था और अब वो लोग भी घटनास्थल पर पहुंच गए थे जिनसे अनिमेष मिलने आया था। मगर इस सारी भागदौड़ का लाभ कुछ नहीं हुआ
था । शाम होने को आई थी और स्थिति अभी भी जस की तस थी । अनिमेष और उसकी कार का कुछ पता नहीं चल पाया था ।

फिर शाम कर करीब 04:00 बजे ....

गायत्री देवी अपनी कार से घटनास्थल पर पहुंची थी। आने के बाद उन्होंने पहले वहाँ मौजूद लोगो से घटना और अब तक हुई खोजबीन की जानकारी ली। और फिर उन्होंने पुलिस-प्रशासन के लोगो से और जोर से अनिमेष को तलाश करने के लिए कहा इस पर हरिद्वार के उन प्रभावशाली लोगो ने उन्हें सरकार के मंत्री जी से सिफारिश लगवाने का आश्वासन दिया । और उन्होंने सिफारिश लगवाई भी जिसका नतीजा यह हुआ कि अनिमेष की तलाश में पुलिस-प्रशासन नये सिरे से जुट गया । मगर फिर शाम को 05:30 बजे के बाद सूरज छिपने लगा और अंधेरा होने लगा था। और एक घंटे के बाद तो बिल्कुल अंधेरा हो गया था। ऐसे में अब रात में तलाशी अभियान चलाना संभव नहीं था, इसलिए तलाशी अभियान अगली सुबह तक के लिए रोक दिया गया।

मगर गायत्री देवी को चैन नहीं था। वे अनिमेष को तलाश करने के लिए हर संभव तरीका आजमाना चाहती थीं । किसी ने उन्हें सलाह दी कि क्यों ना गंगा जी मे अनिमेष की तलाश के लिए प्राइवेट हेलीकॉप्टर की मदद ली जाए तो उन्होंने तुरंत हामी भर दी। एक प्राइवेट हेलीकॉप्टर को अगले दिन गंगा जी में अनिमेष की तलाश के लिए बुक कर

लिया गया ।

इसके अलावा प्राइवेट गोताखोरों को भी बुक किया गया । और पुलिस प्रशासन की पूरी टीम तो साथ थी ही । अब सभी को इंतज़ार था अगले दिन की सुबह का

###

अगले दिन सुबह....

अखबार के फ्रंट पेज पट हेडलाइन छपी थी- 'मायत्री ग्रुप ऑफ कंपनीज का मालिक अनिमेष सिंह अपनी कार सहित गंगा में बहा'। फिर इस हेडलाइन के नीचे डिटेल में छपा हुआ था कि किस तरह हरिद्वार में गंगा नदी के एक पुल पर एक ट्रक ने अनियंत्रित होकर
अनिमेष की कार को पीछे से टक्कर मार दी जिसके परिणाम स्वरूप वह कार पुल की रेलिंग को तोड़ती हुई सीधे गंगा जी में जा गिरी और अनिमेष अपनी कार के साथ ही गंगा की तेज धार में बह गया जिसका अभी तक कोई पता नहीं चल पाया है और यह खबर लिखे जाने तक तलाशी अभियान जारी है।

और खबर केवल हरिद्वार ही नहीं बल्कि आस-पास के सभी शहरों में
और देहरादून में भी अखबार के फ्रंट पेज पर छपी थी।

अनिमेष की प्रेमिका, मोनिका जो देहरादून में रहती थी, वह परेशान तो कल से ही थी। क्योंकि अनिमेष उसे आने का बोलकर आया नहीं था और उसका फोन मिलाने पर बंद जा रहा था । वह पता नहीं कितनी बार उसका फोन मिला चुकी थी, मगर हर बार फोन स्विच ऑफ बता रहा था । इस वजह से मोनिका परेशान तो बहुत थी, लेकिन इंतजार करने के अलावा वह और कर भी क्या सकती थी? क्योंकि उसके पास अनिमेष के अलावा और किसी का नंबर नहीं था ।

फिर अगले दिन सुबह जब उसने अखबार में छपी वह खबर देखी तो उसके होश उड़ गये। उसे एक बार तो यकीन नहीं हुआ। उसने उस खबर को कई बार पढ़ा, बार-बार पढ़ा लेकिन जो सामने था उसे भला कैसे नकारा जा सकता था ?

उनके सारे सपने टूट गये थे। वह बहुत देर तक रोती रही। फिर उसने भी भारी मन से हरिद्वार जाकर देखने का फैसला कर लिया। और फिर उसने अपनी खास सहेली गीता को भी फोन कर दिया जो शादी के बाद अपने पति के साथ

देहरादून में ही रहती थी ।

अनिमेष के एक्सीडेंट और उसके कार सहित गंगा में बह जाने की बात सुनकर गीता भी शॉक रह गयी। उसने अनिमेष को हमेशा अपने मददगार, अपने भाई की तरह देखा था और वह आज जो भी थी वह अनिमेष की ही बदौलत थी। ऐसे में गीता भी अनिमेष के एक्सीडेंट की खबर मिलने पर टूट गयी। वह भी रोने लगी थी।

उन दोनों में फिर यह तय हुआ कि गीता भी अनिमेष के बारे में पता करने मोनिका के साथ चलेगी। और फिर हुआ भी यही ।

मोनिका, गीता और गीता का पति तीनो उस दिन दोपहर के बाद एक प्राइवेट टैक्सी बुक करके देहरादून से हरिद्वार की ओर निकल गये ।

###

उधर हरिद्वार में अगले दिन सुबह होते ही अनिमेष को गंगा जी में तलाश करने का अभियान नये सिरे से पूरे जोर-शोर से चलाया जा रहा था ।

रोड के रास्ते गंगाजी के किनारों पर जाकर भी तलाश किया जा रहा था, प्राइवेट गोताखोरों के द्वारा भी तलाश किया जा रहा था और हेलीकॉप्टर से गंगाजी के ऊपर चक्कर लगाकर भी तलाश किया जा रहा था ।

और इन सब भगीरथ प्रयासों का नतीजा यह निकला कि अनिमेष की कार का पता चल गया । वह हरिद्वार से करीब 60-70 किलोमीटर आगे एक स्थान पर गंगा जी में एक उथले स्थान पर फंसी हुई थी। जिस जगह वह कार मिली थी वह जगह उत्तर प्रदेश के जिला
बिजनौर में पड़ती थी।

कार मिलने की सूचना मिलते ही गायत्री देवी भी अपनी कार लेकर उस स्थान पर पहुंच गयी और उनके साथ के अन्य लोग भी पहुंच गये थे। इसके अलावा पुलिस-प्रशासन के लोग भी पहुंच गये जिन्होंने गायत्री देवी के सामने ही उस कार को गंगा जी से निकलवाया था मगर....
अनिमेष उसमें कहीं नहीं था। फिर उस जगह के आस-पास बहुत जोर-शोर से अनिमेष को ढूंढा गया । प्राइवेट गोताखोरों को भी काम पर लगाया गया। आस-पास का सारा इलाका छान मारा गया मगर अनिमेष कहीं नहीं मिला।

फिर एक बार फिर नए सिरे से अनिमेष को तलाश करने का अभियान शुरू किया गया । हेलीकॉप्टर से गंगा जी के ऊपर फिर चक्कर गया, कार मिलने वाली जगह के आस-पास और गहनता से छानबीन की गयी मगर कोई लाभ नहीं हुआ। एक बार फिर सुबह से शाम हो गई लेकिन अनिमेष का कुछ पता नहीं चला। हालांकि उसे तलाश करने वालों को अब उसके जिंदा बचा होने की उम्मीद कम थी लेकिन फिर भी वे गायत्री देवी के कहने पर पूरे जी-जान से उसे तलाश में लगे हुए
थे।

एक बार फिर शाम का अंधेरा गहराने लगा और जब पूरी तरह अंधेरा हो गया तो अनिमेष को तलाश करने का यह अभियान फिरसे रोकना पड़ा। गायत्री देवी भारी मन से हरिद्वार के उस होटल में लौट गयी जिसमें वह ठहरी हुई थी। लेकिन उन्होंने अभी हार नहीं मानी थी ।
और उन्होंने अनिमेष को तलाश करने के लिए अगले दिन के लिए भी उस हेलीकॉप्टर और उन गोताखोरों को बुक कर लिया था।

###

गायत्री देवी जब हरिद्वार के होटल में लौटी तो मोनिका, गीता और उसका पति उन्हें वहां अपना इंतजार करते हुए मिले। हालांकि गायत्री देवी उन्हें नहीं पहचानती थी और वे सब भी पहले कभी गायत्री देवी से नहीं मिले थे।

लेकिन फिर परिचय हुआ तो गायत्री देवी यह समझ गयी कि मोनिका वही लड़की है जिससे मिलने अनिमेष देहरादून जा रहा था। मोनिका भी गायत्री देवी से लिपटकर रोने लगी थी और उसकी सहेली गीता भी।

उधर अनिमेष के बारे में सोच-सोचकर गायत्री देवी की अपनी हालत भी बहुत खराब थी। मगर तब भी उन्हें मन ही मन यह विश्वास था कि उनके अनिमेष को कुछ नहीं होगा।

और उनका यही विश्वास उनकी शक्ति बना हुआ था। अपने इसी विश्वास के सहारे उन्होंने मोनिका और गीता को भी को भी ढांढस बंधाया और उन्हें शांत किया। फिर उस दिन वे सभी लोग गायत्री देवी के साथ उसी होटल में रुके ।

###

अगले दिन सुबह...

अनिमेष का तलाशी अभियान एक बार फिर नये सिरे से छेड़ा गया । पूरा जोर लगाया गया, हर संभव तरीका इस्तेमाल किया गया, मगर कोई फायदा नहीं हुआ।

ना तो अनिमेष ही मिला और ना ही उसकी लाश मिली। फिर पूरा दिन अनिमेष को ढूढते-ढूंढते निकल गया था, आज गायत्री देवी के साथ मोनिका और गीता भी थीं। सुबह से शाम हो गयी मगर कोई नतीजा नहीं निकला और फिर घोर निराशा के साथ गायत्री देवी, मोनिका और गीता के साथ रात को फिर उसी होटल में लौट गयी।

###

अगले दिन सुबह गीता भारी मन से अपने पति के साथ वापस देहरादून लौट गयी, यह कहकर कि अनिमेष की कोई भी सूचना मिलते ही फौरन उसे खबर कर देना ।

लेकिन मोनिका ने वापस जाने से साफ इंकार कर दिया था और उसने यह फैसला कर लिया था कि वह अनिमेष का पता लगने पर ही वापस जायेगी, और तब तक गायत्री देवी

के साथ ही रहेगी।

उस दिन फिर सुबह से शाम तक अनिमेष को तलाश करने का अभियान चलाया गया मगर नतीजा शून्य ही रहा ।

अब लगभग सभी लोगो को यह विश्वास हो गया था कि अनिमेष अब जीवित नहीं बचा होगा, मगर उसकी लाश ना मिलने से गायत्री देवी और मोनिका को उसके जीवित होने की उम्मीद अभी भी थी।

यही आस इन दोनों को हिम्मत दे रही थी और ये दोनो अब भी अनिमेष को तलाश करने के अभियान में जुटी हुई थी और हरिद्वार में ही डटी हुई थी। गायत्री देवी के साथ उनका अपना ड्राइवर और अनिमेष का ड्राइवर मनोज भी अभी वही रुका हुआ था ।

मगर अब दीपावली का त्योहार आ गया था। इसलिये मनोज उनसे फिर आने की कह कर चला गया। उनके ऑफ़स इंचार्ज नीरज जैन भी वापस दिल्ली चले गये मगर ये दोनों गायत्री और मोनिका हरिद्वार में ही जमी रही।

ये दोनों दीपावली क्या उसके बाद भी हरिद्वार में ही जमी

रहीं और अनिमेष को तलाश करने की हर सम्भव कोशिश करती रहीं। लेकिन दीपावली के और कुछ दिन बाद जब गंगा स्नान का त्योहार आया तब.

उन्हें भी हरिद्वार से वापस लौटने के फैसला करना पड़ा। क्योंकि गंगा स्नान पर हरिद्वार में बहुत भीड़ हो जाती है और जाहिर है कि अनिमेष को अगर मिलना होता तो अब तक मिल जाता। इसलिए गायत्री देवी अब अपने दिल पर पत्थर रखकर वापस दिल्ली जाने को मजबूर हो गयीं ।

मगर वे अकेली नहीं आयीं थी। मोनिका भी उनके साथ ही दिल्ली आयी थी और उसने गायत्री देवी से साफ कह दिया था कि उसकी अनिमेष से शादी भले ही ना हुई हो मगर उसका जो कुछ भी था वह अनिमेष ही था, उसके अलावा उसका इस दुनियां में कोई नहीं है, इसलिए वह भी अब उनके साथ ही रहेगी और अनिमेष के वापस लौटने का इंतजार करेगी। ऐसा ही विश्वास गायत्री देवी को भी था कि उनका बेटा अनिमेष मरा नहीं है और वह एक दिन लौटकर उनके पास वापस जरूर आयेगा।

क्रमशः

###

क्या अनिमेष कभी लौटकर आयेगा ?

अब आगे क्या होगा ? क्या अनिमेष गायत्री देवी को जीवित मिल पायेगा ?

जाने के लिए पढ़ें प्रेम और भावनाओं में डूबी एक हैरतअंगेज कहानी 'वरदान' का अगला भाग ।